2019

International Research Journal of Management Sociology & Humanities

Vol 10 Issue 6

ISSN 2348 – 9359

IRJMSH

WWW.IRJMSH.COM

Analysis of Customer Awareness and Satisfaction towards Self-service Providing Machines in SBI- With special reference to Ballari city 203

Jayalakshmi V.A. -Dr.Chandramma M 203

[illegible] में शारीरिक शिक्षा..214

[illegible] 214

A DRIFT OF CLOUD TO FOG: NEW CHALLENGE IN COMPUTING...223

Dr Pallavi Narang..223

British Indigo Industry and Gandhi's Champaran Satyagrah Movement 230

Vimlesh Narayan jha...230

मध्यकाल एवं वर्तमान भारत में शारीरिक शिक्षा

डॉ. मनोज कुमार [illegible]
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा, [illegible]
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय [illegible]
([illegible]
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली [illegible]

प्रस्तावना–

शारीरिक शिक्षा शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। शिक्षा का [illegible] पढ़ना–लिखना, ज्ञानार्जन करना, स्कूल जाना, पुस्तके पढ़ना आदि [illegible] नहीं है। बल्कि इसका लक्ष्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास से है। यह [illegible] वह प्रक्रिया जो हमारे व्यवहार को विकासोन्मुख बनाती है। शिक्षा के बारे में [illegible] महान विद्वानों ने अपने विचार इव प्रकार प्रकट किए हैं–

"शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली क्रिया है। यह जन्म से साथ [illegible] होती है तथा मृत्युपर्यन्त तक चलती रहती है।" **–डॉ. [illegible] हुसैन**

"शिक्षा व्यक्ति की मानसिक शक्ति का विकास करती है जिसमें [illegible] प्रमुख है, ताकि व्यक्ति की सत्य, अच्छाई और सौन्दर्य के प्रति गहन [illegible] विकसित हो सके।"

–अरस्तु

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास [illegible] प्रोत्साहित करने की एक सुनियोजित प्रक्रिया है, तथा समाज के प्रति [illegible] उत्तरदायित्वों में अपने सामर्थ्य और शक्ति का इस प्रकार प्रयोग करना सिखाती [illegible] जिस कारण व्यक्तिगत हित सार्वभौमिक हित में समाहित हो सके।

शारीरिक शिक्षा का अर्थ (Meaning of Physical Education)

शारीरिक शिक्षा दो शब्दों 'शारीरिक' तथा 'शिक्षा' के योग से बना है। शारीरिक का शब्दिक अर्थ है शरीर जिसका सीधा सम्बन्ध शारीरिक [illegible] स्वास्थ्य, शक्ति, सहनशीलता, गति, फुर्ती और खेल के मैदान पर शारीरिक [illegible] से है। यह अपने आप में शारीरिक विकास की दिशा में अद्वितीय योगदान [illegible] सकता है। शिक्षा के अर्थ से तात्पर्य सीखने की एक ऐसी अनवरत प्रक्रिया [illegible] समग्र विकास से है, जो व्यक्ति उसके सम्पूर्ण जीवन में कदम–कदम पर [illegible] सिद्ध होती है। शारीरिक शिक्षा की शिक्षा छात्र की सीखने–सीखाने की प्रक्रिया [illegible] सहायक होती है। इन दोनों शब्दों का संयुक्त रूप से अर्थ शारीरिक [illegible] से अथवा गतिविधियों के कार्यक्रम से है, जो मानवीय शरीर के विकास व [illegible] शारीरिक शक्तियों के विकास तथा शारीरिक कौशलों के विकास के लिए आवश्यक है।

अधिकांश पाठ्यक्रम का निर्माण करने वाले शिक्षाविद शारीरिक शिक्षा के प्रसंग में शिक्षा के अर्थ को सही दृष्टिकोण से अभी तक भी भली–भाँति नही समझ पाये हैं। ये पाठ्यक्रम निर्माता शिक्षा को शैक्षिक विकास तक ही सीमित मानते हैं, जबकि शारीरिक शिक्षा के बिना सुव्यवस्थित शिक्षा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जिस प्रकार, शरीर को मस्तिष्क और मस्तिष्क को शरीर से अलग नहीं किया जा सकता उसी प्रकार शारीरिक शिक्षा को शिक्षा से अलग नहीं किया जा सकता।

शिक्षा के साथ शारीरिक शब्द जुड़ जाने से शिक्षा की प्रक्रिया में पूर्णता आती है। इसका उद्देश्य व्यापक तौर पर शारीरिक क्रिया–कलाप (व्यायाम) के माध्यम से व्यक्ति को सुशिक्षित बनाना है। इससे व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता में निखार आता है और उसके फलस्वरूप व्यक्ति का समग्र विकास होता है। इस प्रकार शारीरिक एवं बौद्धिक संतुलन होने पर व्यक्ति शारीरिक रूप से चुस्त, मानसिक रूप से सजग, भावनात्मक रूप से संतुलित सामाजिक रूप से सामंजस्य युक्त, नैतिक रूप से सत्यनिष्ठ और आध्यात्मिक रूप से उन्नत होता है। यह सब होने के साथ–साथ जब हम यथार्थ जीवन से जुड़ते हैं तो शारीरिक शिक्षा व्यक्ति के जीवन में आने वाली दिन–प्रतिदिन की परिस्थितियों से सम्बन्धित व्यवहारिक पक्ष से जुड़े सभी अनुभवों के प्रति अपना अमूल्य योगदान देती है। यह किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन में आने वाली किसी भी अज्ञात परिस्थिति का सामना करने योग्य बनाती है। शारीरिक शिक्षा तन और मन दोनों के विकास में सहायक होती है इसीलिए वर्तमान समय में समूचे विश्व में शिक्षा के क्षेत्र में प्रत्येक स्तर पर शारीरिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा का एक अभिन्न अंग माना गया है।

शारीरिक शिक्षा को एक ऐसी शैक्षिक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें शारीरिक गतिविधि दक्षता और प्रासंगिक ज्ञान की सहायता से किसी व्यक्ति के स्वभाव में एक निश्चित प्रभाव हासिल करने के लिए उसे एक सुखद, मनोरंजक और फलदायी जीवनशैली अपनाने को प्रेरित किया जाता है। दूसरे शब्दों में शारीरिक शिक्षा, शिक्षा का वह हिस्सा है जो व्यक्ति के स्वास्थ्य के सभी अवयवों में सुधार करके उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करती है। एक व्यक्ति को नियमित शारीरिक गतिविधियों में सुव्यवस्थित बनाए रखने के लिए शारीरिक शिक्षा एक जीवनपर्यन्त चलने वाली गतिमान प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप व्यक्ति में पर्याप्त शारीरिक स्वस्थता, भावनात्मक नियंत्रण और खेल व व्यायाम के प्रति सम्यक सहभागिता बनी रहती है। इस प्रकार, शारीरिक शिक्षा बेहतर स्वास्थ्य योग्य अवकाश समय की गतिविधियों के लिए एक व्यक्ति की जीवनशैली में बदलाव लाती है और स्वास्थ्य और कुशलता के प्रति उसमें

मनोजमौर्य

Journal of Interdisciplinary Cycle Research ISSN:0022-1945 (IMPACT FACTOR-6.2) An UGC-CARE Approved Group – II Journal (Scopus Indexed Till 1993)

Download UGC-CARE Group 'II' Journals List:UGC-CARE Group 'II' Journals list - Serial Number. 21259 Submit paper Email id: submitjicrjournal@gmail.com

CALL FOR PAPERS

We welcome big achievers, professors, research scholars to contribute their original works in forms of case studies, empirical studies, meta-analysis and theoretical articles and illuminate the pages with their universal ideas and fresh perspectives to make the journal synonymous to the entire research field.

Science,Engineering and Technology

- Aeronautical and Aerospace Engineering
- Agricultural Engineering
- Applied Chemistry
- Applied physics
- Architecture and Construction
- Artificial Intelligence
- Automobile Engineering
- Biotechnology
- Ceramic Technology

भारतीय शिक्षा में योग दर्शन की उपयोगिता

डा. मनोज कुमार मीना,

सहायक आचार्य, शिक्षासंकाय,

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय-

संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-16

शोधसार-

शिक्षा किसी न किसी रूप में एक शिशु का सर्वांगीण विकास करके उसको अपने जीवन में विभिन्न कर्तव्य व उत्तरदायित्वों को निर्वाह करने के लिए पूरण रूप से तैयार करती है। शिक्षा व्यक्तित्व का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं संवेगात्मक विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सभी समस्याओं का समाधान करने के लिए योग्यता धारण करता है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल जाता है, उसी प्रकार पशु समान मानव भी शिक्षा के प्रकाश से अपने भविष्य को उज्ज्वल तथा प्रकाशमय बनाता है। जिसके पश्चात् उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैली रहती है।

शिक्षा एक ओर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है जिससे व्यक्ति की उन्नति तथा प्रगती होती है। वहीं दूसरी तरफ उसे समाज का महत्वपूर्ण नागरिक बनाकर देश प्रेम की भावना उसमें पैदा करती है। शिक्षा के द्वारा प्राचीन परम्पराओं और संस्कृतियों का हस्तानान्तण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में करती है। शिक्षा बालक के हृदय में देश प्रेम बलिदान व निहित स्वार्थों की त्याग की भावना को जाग्रत करती है, शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सार्थक भूमिका निभाती है।

योगशास्त्र योग का अध्ययन है। तो फिर योग का क्या तात्पर्य होता है। योग दर्शन के प्रणेता पतंजलि के अनुसार 'योगश्चित्तवृत्तिनरोधः' (योगसूत्र 1.2) चित्तवृत्ति का निरोध योग है। भगवद्गीता में 'दुःखसुखसंयोगवियोगं योगसंश्तिम्' (6.23) अर्थात् सख-दुःख का संयोग-वियोग या सुख-दुःख के होने पर भी उससे वियोग की स्थिति को योग कहा जाता है। अन्यत्र भी कृष्ण भगवान का शब्द है - 'समत्वं योग उच्यते' अर्थात् सम्भावना ही योग कहा जाता है। इस

शोधपत्र में भारतीय शिक्षा में योग दर्शन की उपयोगिता के अन्तर्गत योग सूत्र, योग दर्शन के अनुसार शिक्षा के सिद्धान्त, योग दर्शन में शिक्षा के उद्देश्य, योग दर्शन में अध्यापक की भूमिका, योगदर्शन में विद्यार्थी का व्यक्तित्व, पाठ्यचर्या, शिक्षणविधि, विद्यालय और अनुशासन के बारे में विस्तार से प्रस्तुत किया जाएगा।

भूमिका-

शिक्षा किसी न किसी रूप में एक शिशु का सर्वांगीण विकास करके उसको अपने जीवन में विभिन्न कर्तव्य व उत्तरदायित्वों को निर्वाह करने के लिए पूरण रूप से तैयार करती है। शिक्षा व्यक्तित्व का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं संवेगात्मक विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सभी समस्याओं का समाधान करने के लिए योग्यता धारण करता है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल जाता है, उसी प्रकार पशु समान मानव भी शिक्षा के प्रकाश से अपने भविष्य को उज्ज्वल तथा प्रकाशमय बनाता है। जिसके पश्चात् उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैली रहती है। शिक्षा एक ओर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है जिससे व्यक्ति की उन्नति तथा प्रगती होती है। वहीं दूसरी तरफ उसे समाज का महत्वपूर्ण नागरिक बनाकर देश प्रेम की भावना उसमें पैदा करती है। शिक्षा के द्वारा प्राचीन परम्पराओं और संस्कृतियों का हस्तानान्तण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में करती है। शिक्षा बालक के हृदय में देश प्रेम बलिदान व निहित स्वार्थों की त्याग की भावना को जाग्रत करती है, शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सार्थक भूमिका निभाती है। निश्चय ही शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली एक ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है जो मानव को अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से निभाने में सक्षम बनाती है एवं राष्ट्र के विकास में सहयोग प्रदान करती है।

योगशास्त्र योग का अध्ययन है। तो फिर योग का क्या तात्पर्य होता है। योग दर्शन के प्रणेता पतंजलि के अनुसार 'योगश्चित्तवृत्तिनरोधः' (योगसूत्र 1.2) चित्तवृत्ति का निरोध योग है। भगवद्गीता में 'दुःखसुखसंयोगवियोगं योगसंश्तिम्' (6.23) अर्थात् सख-दुःख का संयोग-वियोग या सुख-दुःख के होने पर भी उससे वियोग की स्थिति को योग कहा जाता है। अन्यत्र भी कृष्ण भगवान का शब्द है - 'समत्वं योग उच्यते' अर्थात् सम्भावना ही योग कहा जाता है। गीता की दोनों उक्तियों से स्पष्ट है कि योग आत्मा की स्थिति 'चित्तवृत्ति निरोध' 'सम्भाव' है। इसका स्पष्टीकरण योग भाष्यकार के शब्दों से होता है - 'योगः समाधिः' अर्थात् जिससे चित्त अच्छी तरह स्थान ले वह योग है।

Peer Reviewed / Refereed Research Journal, Vol. 9, Issue 2, July - Dec 2023 ISSN 2454-3950

Impact Factor - 3.855 (SJIF)

पंखुड़ी
Pankhuri

AN
INTERDISCIPLINARY JOURNAL

(BIANNUAL, BILINGUAL)

CHIEF EDITOR

Prof. Virendra Singh

Editor

Dr. Kiran Garg

gargkiran101@gmail.com

www.pankhurijournal.in

09456481541, 09412106486

Peer Reviewed/ Refereed Research Journal, Vol. 9, Issue 2, July - Dec 2023 ISSN 2454-3950

Contents

1.	"A Comparative Study of E-banking Services in Private and Public Sector Banks, Assessing Its Impact On Customer Satisfaction" - Dhwani Gupta	01
2.	Artificial Intelligence and Indian Higher Education Saroj, Prof. Vijay Jaiswal	04
3.	भारतीय परिप्रेक्ष्य में तीर्थाटन, विरासत संरक्षण और समावेशी शिक्षा डॉ० प्रेम सिंह सिकरवार,	07
4.	वैश्विक सन्दर्भ में वर्तमान भारतीय शिक्षा भारती शर्मा, गवेषिका	10
5.	कौटिल्य नीतियों की वर्तमान में प्रासंगिकता डॉ० दैवेन्द्र कुमार	13
6.	भारतीय ज्ञान परम्परा तथा भारतीय नृत्य कला अदिति सामन्त (अनुसन्धात्री)	16
7.	संस्कृतवाङ्मये वेदांगेषु शिक्षायाः भूमिका चिरंजीनारायणरथः	20
8.	श्रीमद्भगवद्गीता में निहित मूल्यों की सार्थकता डॉ० मनोज कुमार मीणा	22
9.	विश्वनाथकविराज तं मम्मटकाव्यलक्षणखण्डनं स्वमतस्थापनम् च पूनम कुमारी	27
10.	1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम : एक पुनरावलोकन डॉ० मुकेश पाल, रोहित कश्यप	30
11.	Value Education : Need of the Hour Prof. Vijay Jaiswal, Shilpi Agarwal	32
12.	"A Comparative Study of Teaching Competency of Rural & Urban Secondary School Teachers of Meerut District of Uttar Pradesh" — Amit Jain	41
13.	आयुर्वेदिक लोकोद्रियों से रोगों का समाधान डॉ० संतोष गोडरा	44
14.	उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन डॉ० जितेन्द्र सिंह गोयल, दीपांजली	47
15.	बिहारी के काव्य में समाज का यथार्थ स्वरूप डॉ० ओमवीर सिंह	52
16.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राम काव्य डॉ० शीतल	54
17.	भारतीय मातृभाषा शिक्षण का महत्व डॉ० ऊषा रानी मलिक	56
18.	ऐतिहासिक व धार्मिक दृष्टि से सुल्तानपुर कंचन देवी, प्रो० नीतू वशिष्ठ	58
19.	नवीन प्रवृत्तियाँ व लोक-कलाऐं सतेन्द्र कुमार, प्रो० वन्दना वर्मा	61
20.	मधु कांकरिया के उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' में नारी विद्रोह का स्वर : धार्मिक मान्यताओं एवं आडम्बरों के संदर्भ में सरिता पारीक	64
21.	A Study of Personality and Career Aspiration in Relation with Academic Achievement of Secondary School Students - Dr. Vinita, Neetu Singh	67
22.	महिला सशक्तीकरण एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 डॉ० सोमेश कुमार	71
23.	A Comparative Study of the Attitude of Government Secondary School Teachers of Different Stream (Science & Art) Towards Teaching Profession - Dr. Kiran Garg, Dr. Preeti Sharma, Dr. Amit Kumar Sharma	73

पँखुड़ी
Pankhuri
INTERDISCIPLINARY JOURNAL

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित मूल्यों की सार्थकता

डॉ० मनोज कुमार मीणा
सहाचार्य, शिक्षापीठ
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय
संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली–16

सारांशिका

प्रस्तुत पत्रक के अन्तर्गत मेरे द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता मे निहित मूल्यों की सार्थकता को प्रस्तुत किया गया है कि समाज के सभी वर्गों के लिये गीता में निहित मूल्य कैसे उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हैं तथा कैसे उनके द्वारा समाज को लाभान्वित किया जा सकता है। श्रीमद्भगवद्गीता जीवन के एक अंग के लिये महत्वपूर्ण नही हैं अपितु जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित कर उनमें अपना प्रभाव दिखाती है। इस विषय को अति संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत करने का कार्य किया है।

अन्त में समाज के समस्त वर्गों के श्री मद्भगवद्गीता में निहित मूल्यों की सार्थकता पर बल दिया गया है जिससे समुदायों में श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति नव चेतना रूपी जागृति का संचार किया जा सके. श्रीमद् भगवद्गीता में निहित मूल्यों की आधुनिक प्रासंगिकता क्या है इस बात को ध्यान में रखकर समस्त पक्षों पर बल दिया जा सके। इस पर विशेष ध्यान दिया गया है ।

मुख्य बिन्दु : श्रीमद्भगवद्गीता, मूल्य, सार्थकता, अनुभूति, संस्कृति।

प्रस्तावना

मनुष्य चिन्तनशील प्राणी है। वह जो कुछ भी देखता–सुनता है ,उसी पर चिन्तन करने लगता है। चिन्तन करना, गहन स्तर पर विचार करना और सत्य को जानने का प्रयत्न करना ही मनुष्य की विशेषता है मात्र बुद्धि द्वारा चिन्तन के आधार पर ज्ञान, विज्ञान कला धर्म और संस्कृति की रचना की है, जो मानव–जाति की एक महत्त्वपूर्ण निधि के रूप में जानी जाती है।

भारतीय ऋषियों ने प्रकृति की गोद में बैठकर, प्राकृतिक सौन्दर्य से रसविभोर होकर, केवल बुद्धि के सहारे चिन्तन ही नहीं किया, बल्कि अपने भीतर की गहराई में जाकर और बुद्धि से परे जाकर, शाश्वत सत्य की अनुभूति की, उसे अन्तरात्मा की आँखों से देखकर, प्रत्यक्ष दर्शन किया। इतना ही नहीं महापुरूषों ने बुद्धि के द्वारा तर्क और कल्पना के सहारे असंख्य दृष्टि से महत्त्वपूर्ण चिन्तन भी किया है, किन्तु वैदिक ऋषियों ने तो शरीर, इन्द्रिय, मन और बुद्धि से परे जाकर किसी गहन स्तर पर सत्य की अनुभूति इस प्रकार की, जैसे उनको सत्य का जो साक्षात्कार वैदिक मंत्रों के रूप में परिलक्षित है।

श्रीमद्भगवद्गीता : संस्कृत साहित्य का अत्यंत लोकप्रिय महाकाव्य "श्रीमद्भगवदगीता" महाभारत–संज्ञक उस "पंचम वेद" का एक उपदेशात्मक भाग है, जिसके विषय मे विद्वन्मड़ली में प्रसिद्ध है–"अनन्तवेद महाभारत में सारूप में प्रकट हैं और स्वयं महाभारत का सर्वस्व भगवद्गीता के सात सौ श्लोकों में निहित है"।

कुरुक्षेत्र में हुये महाभारत युद्ध के प्रारंभ में प्रयोजन–विशेष से किये गये प्रवचन "श्रीमद्भगवद्गीता" के उपदेशक स्वयं भगवान श्रीकृष्ण हैं। सृष्टि के आदि में उन्होंने इसका मूल रूप में उपदेश विवस्वान के प्रति किया था। तत्पश्चात् यह युग–युग में परम्परागत रीति से राजर्षियों को प्राप्त होता रहा। यह ज्ञान–विशेष द्वापर–युग में बहुत काल तक लुप्त रहा। इसको ही धर्म युद्ध से पराङमुख हुए किंकर्तव्य–विमूढ़ अर्जुन के प्रति पुनः उपदेश द्वारा योगबल से प्रकाश में लाने का कार्य षोडश–कला संपन्न अवतार–विशेष योगराज श्रीकृष्ण ने सुसंपन्न किया और जन–साधारण को परमतत्त्व की प्राप्ति कराने के लिए इसका यथासमय संपादन सत्साहित्य के निर्माण व संकलन के कारण व्यासोपाधि से विभूषित भगवान् नारायण के ही अंशावतार महर्षि कृष्णद्वैपायन ने किया। इस ईश्वरीय वाणी भगवद्गीता में वेद, वेदांत और अन्य विविध शास्त्रों के मंथन से उद्भूत पीयूष का भारतम अंश निहित है।

"श्रीमद्भगवद्गीता मे ज्ञान और भक्ति के भवन को कर्म की नींव पर खड़ा किया गया है, कर्म की जो परिसमाप्ति है, उस ज्ञान में कर्म को ऊपर उठाकर रखा गया है तथा कर्म का वर्णन उस भक्ति के द्वारा किया गया है, जो कर्म की प्राण हैं और जहाँ से कर्म उद्भूत होते है" ।

श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश विशेष के लिए नहीं है और न उसने अपना कोई पृथक सम्प्रदाय ही स्थापित किया है। उसकी संपूर्ण उपासना–पद्धतियों के साथ सहानुभूति है। यही कारण है कि हिन्दू धर्म–भावना की व्याख्या करने, के लिए यह ग्रंथ सर्वथा उपयुक्त है। वस्तुतः यह भारतीय तत्त्वज्ञान के इतिहास मे समय–समय पर हुए उन अनेक महान् समन्वयों में से एक है जिसमें विश्व धर्म की व्याख्या की गई है–मानव धर्म का विश्लेषण किया गया है।

मूल्य : मूल्य "जो होना चाहिए" से संबंधित एक विचार का नाम है। यह हमारे विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को प्रभावित करता है मूल्य का व्यक्ति के व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवस्था से बहुत गहरा संबंध है। मूल्य जीवन के उद्देश्यों और उन्हें प्राप्त करने के साधनों को स्पष्ट करता है। हमारी सभी सामाजिक गतिविधियाँ मूल्यों से जुड़ी हुई हैं।

मूल्य हमेशा इस भावना से जुड़ा होता है कि समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि जो मानदंड समाज के लिए सर्वाधिक वांछनीय हैं, उन्हें मूल्य कहा जाता है।